"रोगी"

• दुख विच जमै दुख मरै दुख विच कार कमाई । गरभ जोनी विच कदे न निकलै बिसटा माहि समाई ।1।

अर्थः- हे भाई ! अपने मन के पीछे चलने वाला मनुष्य दुख में पैदा होता है दुख में मारता है दुख में ही सारी उम्र कार्य - व्यवहार करता रहता है । वह सदा जनम - मरन के चक्करों में पड़ा रहता है, जब तक वह मन का मुरीद है तब तक कभी भी वह इस चक्कर में से निकल नहीं सकता क्योंकि वह सदा विकारों की गंदगी में जुड़ा रहता है ।

धिग धिग मनमुखि जनम गवाइआ । पूरे गुर की सेव न कीनी हरि का नाम न भाइआ ।1। (3-1130)

अर्थः- हे भाई ! अपने मन के पीछे चलने वाला मनुष्य अपना जीवन गवा लेता है, उसको लोक - परलोक में धिक्कारें ही पड़ती हैं उसने सारी उम्र ना पूरे गुरु का आसरा लिया और ना ही परमात्मा का नाम उसको प्यारा लगा ।

• नानक हउमै रोग बुरे । जह देखा तह एका बेदन आपे बखसै सबदि धुरे ।1। रहाउ।

अर्थः- हे नानक ! अहंकार से पैदा होने वाले आत्मिक रोग बहुत खराब हैं । मैं तो जगत में जिधर देखता हूँ उधर इस अहंकार की पीड़ा ही देखता हूँ । धुर से जिसको स्वयं ही बख्शता है उसको गुरु के शब्द में जोड़ता है ।

आपे परखे परखणहारै बहुर सूलाक न होई । जिन कउ नदर भई गुरि मेले प्रभ भाणा सच सोई ।2।

अर्थः- परखने की ताकत रखने वाले परमात्मा ने स्वयं ही जिनको परख के स्वीकार कर लिया है, उनको दोबारा अहंकार का कष्ट नहीं होता । जिस पर परमात्मा की मेहर निगाह हो गई, उनको गुरु ने प्रभु - चरणों में जोड़ लिया । जो मनुष्य प्रभु को प्यारा लगने लग जाता है, वह उस सदा-स्थिर प्रभु का रूप ही हो जाता है ।

पउण पाणी बैसंतर रोगी रोगी धरति सभोगी । मात पिता गाइआ देह सि रोगी रोगी कुटंब संजोगी ।3।

अर्थः- अहंकार का रोग इतना बली है कि हवा, पानी, आग आदि तत्व भी इस रोग में ग्रसे हुए हैं, ये धरती भी अहंम् रोग का शिकार है जिसमें

से प्रयोग के बेअंत पदार्थ पैदा होते हैं । अपने - अपने परिवारों के संबंधों के कारण माता – पिता, माया, शरीर ये सारे ही अहंकार के रोग में फसे हुए हैं ।

रोगी ब्रहमा बिसन सरुद्रा रोगी सगल संसारा । हरि पद चीन भए से मुकते गुर का सबद वीचारा ।4।

अर्थः- साधारण जीवों की बात ही क्या है ? बड़े - बड़े कहलवाने वाले देवते ब्रहमा, विष्णू और शिव भी अहंकार के रोग में हैं, सारा संसार ही इस रोग में ग्रसा हुआ है । इस रोग से वही स्वतंत्र होते हैं जिन्होंने परमात्मा के साथ मिलाप अवस्था की कद्र समझ के गुरु के शब्द को अपने सोच मण्डल में टिकाया है ।

रोगी सात समुंद सनदीआ खंड पताल सि रोगि भऐ । हरि के लोक सि साच सुहेले सरबी थाई नदरि करे ।5।

अर्थः- सारी नदियों समेत सातों समुंदर अहंकार के रोगी हैं, सारी धरतियाँ और पाताल ये भी अहंकार रोग से भरे पड़े हैं । जो लोग परमात्मा के हो जाते हैं वे उस सदा - स्थिर प्रभु में लीन रहते हैं और सुखी जीवन गुजारते हैं, प्रभु हर जगह उन पर मेहर की नजर करता है ।

रोगी खट दरसन भेख धारी नाना हठी अनेका । बेद कतेब करहि कह बपुरे नह बूझहि इक ऐका ।6।

अर्थः- छह ही भेषों के धारण करने वाले जोगी - जंगम आदि व अन्य अनेक किस्मों के हठ साधना करने वाले भी अहंम् रोग में फंसे हुए हैं । वेद और कुरान आदि धर्म - पुस्तकें भी उनकी सहायता करने में अस्मर्थ हो जाती हैं, क्योंकि वे उस परमात्मा को नहीं पहचानते जो एक स्वयं ही स्वयं सारी सृष्टि का कर्ता और इसमें व्यापक है ।

मिठ रस खाई सु रोग भरीजै कंद मूलि सुख नाही । नाम विसारि चलहि अनमारगि अंत कालि पछताही । 7।

अर्थः- जो मनुष्य गृहस्थ में रह के हरेक किस्म के स्वादिष्ट पदार्थ खाता है वह भी अहंकार रोग में लिबड़ा हुआ है, जो मनुष्य जगत त्याग के जंगल में जा बैठता है उसको भी निरे गाजर - मूली खा लेने से आत्मिक सुख नहीं मिल जाता । गृहस्थी हों चाहे त्यागी परमात्मा का नाम भुला के जो - जो भी और अन्य रास्ते पर चलते हैं वे आखिर पछताते ही हैं ।

तीरथ भरमै रोगु न छूटसि पड़िआ बाद बिबाद भइआ । दुबिधा रोग सु अधिक वडेरा माइआ का मुहताज भइआ ।8।

अर्थः- जो मनुष्य तीर्थों पर भटकता फिरता है उसका भी अहम् रोग नहीं मिटता, पढ़ा हुआ मनुष्य भी इससे नहीं बचा, उसको झगड़ा - बहस रूप हो के अहंकार का रोग चिपका हुआ है । परमात्मा के बिना किसी और आसरे की झाक एक बड़ा भारा रोग है, इसमें फसा हुआ मनुष्य सदा माया का मुहताज बना रहता है ।

गुरमुखि साचा सबदि सलाहै मनि साचा तिस रोग गइआ । नानक हरिजन अनदिन निरमल जिन कउ करमि नीसाण पइआ ।9। (1-1153)

अर्थः- जो भाग्यशाली मनुष्य गुरु की शरण पड़ता है, वह गुरु के शब्द में जुड़ के सदा - स्थिर रहने वाले परमात्मा की महिमा करता है, उसके मन में सदा कायम रहने वाला प्रभु सदा बसता है, इस वास्ते उसका अहंकार का रोग दूर हो जाता है । हे नानक ! परमात्मा के भक्त सदा पवित्र जीवन वाले होते हैं, क्योंकि प्रभु की मेहर से उनके माथे पर नाम स्मरण का निशान चमक मारता है ।

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"